प्रेम एक ऐसी चीज है, जो हारे हुए व्यक्ति को भी जीता देती है। लेकिन घृणा एक पूरी तरह से सफल हुए व्यक्ति को भी नीचे गिरा देती है। -अज्ञात।

विचार-प्रवाह देहरादून, शनिवार 5 फरवरी 2022

पेज थ्री

www.page3news.in

फिर खतरे की घंटी बजा दी

खासकर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर विशेष सावधानी बरतने के निर्देश दिए गए हैं। इस नए वैरिएंट बी.1.1.529 की पहचान पिछले हफ्ते साउथ अफ्रीका में हुई। हालांकि इसके मामले अभी ज्यादा नहीं हैं, प्रभावित इलाके भी सीमित ही हैं।

मर्नाज शाह।।

अब जब कोरोना संक्रमण के नए मामले काफी हद तक काबू में नजर आ रहे थे और देश में तीसरी लहर की आशंका कमजोर पड़ती जा रही थी, अचानक इस वायरस के एक नए वैरिएंट ने फिर खतरे की घंटी बजा दी है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने राज्य सरकारों को पत्र लिखकर आगाह किया है। खासकर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर विशेष सावधानी बरतने के निर्देश दिए गए हैं। इस नए वैरिएंट बी. 1.1.529 की पहचान पिछले हफ्ते साउथ अफ्रीका में हुई। हालांकि इसके मामले अभी ज्यादा नहीं हैं, प्रभावित इलाके भी सीमित ही हैं। इसके बावजूद अगर इस नए वैरिएंट को इतनी गंभीरता से लिया जा रहा है तो उसकी वजह है इसमें दिखे अप्रत्याशित रूप से ज्यादा म्यूटेशन। विशेषज्ञों के मुताबिक, इस वैरिएंट में करीब 50 म्यूटेशन देखे गए हैं, 30 से अधिक तो सिर्फ स्पाइक प्रोटीन में हैं। ध्यान रहे, ज्यादातर वैक्सीन स्पाइक प्रोटीन को ही निशाना बनाती हैं। इसी के सहारे वायरस मानव शरीर की कोशिकाओं तक अपनी पहुंच सुनिश्चित करता है। जाहिर है, स्पाइक प्रोटीन में इतने सारे म्यूटेशन से यह सवाल खड़ा हो गया है कि पता नहीं अब तक उपलब्ध तमाम टीके वायरस के इस नए वैरिएंट पर किस हद तक कारगर होंगे, होंगे भी या नहीं। बोत्सवाना में ऐसे लोग भी इससे संक्रमित हुए हैं, जो टीके के सभी आवश्यक डोज ले चुके हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह संक्रमण हवा के जरिए भी फैल सकता है। हांगकांग में होटल के अलग–अलग कमरों में ठहरे लोगों के स्वैब में इसकी मौजूदगी से लगता है कि इसके फैलने के लिए लोगों का एकदम पास आना या किसी तरह से इसके स्पर्श में आना जरूरी नहीं है। सच है कि इस नए वैरिएंट की नुकसान पहुंचाने की क्षमता और इस पर काबू पाने के तरीकों का पता करने के लिहाज से ये जानकारियां नाकाफी हैं। मगर इसी वजह से सावधानी और ज्यादा जरूरी हो जाती है।

खतरा यह बन गया है कि कहीं जाते–जाते भी लौट आने वाली यह महामारी इस बार अब तक के हमारे सारे प्रयासों पर पानी फेरते हुए तमाम टीकों को बेअसर न साबित कर दे। ध्यान रखना होगा कि पिछले करीब दो साल से इसके साये में रहते हुए लोग आजिज आ चुके हैं।

यूरोप के कई शहरों में बढ़ते संक्रमण के मद्देनजर लगाई गई पाबंदियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन की खबरें हैं। अपने देश में भी परेशानी भरे लंबे दौर के बाद अब स्थिति सामान्य होने की ओर है। ऐसे में इस आशंका के लिए कोई गुंजाइश नहीं बनने दी जा सकती कि हालात फिर से उतने ही गंभीर हो जाएंगे। इसका एकमात्र तरीका है यह सुनिश्चित करना कि बाहर से आने वाले एक–एक व्यक्ति की बारीकी से जांच करने और सभी आवश्यक कदम उठाने में किसी भी तरह की लापरवाही न हो।

संकल्प और तप

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

मानना कठिन लगता है तो घ्गवेद के दसवें मंडल के 129 वें सूक्त नासदीय सूक्त बतलाता है कि सृष्टि के उत्पन्न होने से पहले अर्थात् प्रलय अवस्था में यह जगत अन्धकार से ढंका था। यह जगत ईश्वर के संकल्प और तप की महिमा से उत्पन्न हुआ।

प्रलय के समय यह संसार अंधकार और जल से ढक जाता है। एक आश्चर्यजनक समानता है कि सागर की असीम गहराइयों में, समुद्र तल से नीचे यही स्थिति है हमेशा रहती है। यहां पर मत्स्य न्याय का सिद्धांत चलता है। इस सिद्धांत में बड़ी मछली का छोटी को खा जाना उचित है। जाहिर है इस सिद्धांत में दया भावना नहीं है और शायद इसीलिए प्रजापति ने दानवों को दं' (दया भावना) का उपदेश दिया। एक और उल्लेखनीय तथ्य है कि हर बीज जमीन के नीचे पाताल में जाता है और अंकुर फोड़ कर आता है। बीज कामना भाव है।

संपादकीय

क्षमता बढ़ानी होगी

उन्नत तकनीक वाले आधुनिक युग में सैन्य ताकत को केवल लड़ाकू विमानों, टैंकों और तोपों से ही दुश्मन पर हावी होने लायक नहीं बनाया जा सकता। हालांकि पिछले कुछ सालों के दौरान भारतीय सेना का तेजी से आधुनिकीकरण हुआ है। लेकिन फिर भी इस दिशा में काफी कुछ करने की जरूरत है। भारतीय सेना को आर्टिफिशल इंटेलिजेंस और डेटा एनेलिटिक्स, साइबर तकनीक, दुश्मन की गतिविधियों की तस्वीरें लेने वाले और दुश्मन के इलाकों की टोह लेने वाले मानव रहित विमान आदि से लैस करना होगा। ध्यान रखना होगा कि उपग्रह संचार की क्षमता, लंबी दूरी की अचूक मार करने वाली मिसाइल और रॉकेट बम के जरिये ही भविष्य के युद्ध की दिशा तय होगी। भारतीय सेनाओं को इन क्षेत्रों में अपनी क्षमता में तत्काल भारी इजाफा करने की जरूरत है। सैन्य ताकत के सहारे ही समर नीति को कामयाब बनाया जा सकता है। दुश्मन में खौफ पैदा करने लायक बनने के लिए जहां वायुसेना को लड़ाकू विमानों के नए स्क्वॉड्रन और नौसेना को नई पनडुब्बियां और संहारक युद्धपोत हासिल करने होंगे। वहीं थलसेना को भी सीमा पार देखने और हमला करने की नई क्षमता प्राप्त करने की योजनाएं सक्रियता से लागू करनी होंगी।

सवाल यह उठता है कि डेढ़ साल से अधिक वक्त तक युद्ध के कगार पर खड़ी दोनों सैन्य ताकतें क्या वाकई युद्ध चाहती हैं या फिर युद्ध का डर दिखाकर दूसरे को झुका देने की रणनीति पर चल रही हैं?

दुश्मन से कैसे निपटें

रंजीत कुमार।।

पिछले दो सालों में भारतीय सुरक्षा की चुनौतियां खतरे के निशान के ऊपर रही हैं। लग रहा है कि साल 2022 में भी ये ऊपर ही रहेंगी। इस दौरान भारतीय सुरक्षा नेतृत्व ने दृढ़ संकल्प के साथ अपने राष्ट्रीय सामरिक हितों और सीमाओं की रक्षा की है, लेकिन यह भी सही है कि इस वजह से भारतीय सुरक्षा तैयारियों पर भारी दबाव पड़ा है। पूर्वी लद्दाख से लगे भारत–चीन सीमांत इलाकों में चीन ने मई, 2020 के बाद से ही अपने 50 हजार से अधिक सैनिक तैनात कर भारतीय सेना के समक्ष गंभीर चुनौती पेश की। इसके मद्देनजर भारतीय सेना को भी सीमा पर भारी संख्या में सैनिकों की तैनाती करनी पड़ी। सवाल यह उठता है कि डेढ़ साल से अधिक वक्त तक युद्ध के कगार पर खड़ी दोनों सैन्य ताकतें क्या वाकई युद्ध चाहती हैं या फिर युद्ध का डर दिखाकर दूसरे को झुका देने की रणनीति पर चल रही हैं?

इसमें कोई शक नहीं कि भारतीय सामरिक कर्णधारों के लिए 2022 अग्निपरीक्षा का साल साबित होने वाला है। क्या इस अग्नि परीक्षा में हम सफल हो पाएंगे? यहां स्पष्ट कर लेना चाहिए कि चुनौती युद्ध में उलझकर जीतने की नहीं, बल्कि युद्ध लड़े बगैर पॉजिटिव नतीजे हासिल करने की है। युद्ध जीतने में सैनिक ताकत की अहम भूमिका होती है और यह

स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि सैन्य ताकत के लिहाज से चीन भारी पड़ता है। बावजूद इसके, भारत के साथ युद्ध चीन के लिए भी विनाशकारी साबित होगा। इसलिए वह भी युद्ध का हौवा खड़ाकर भारत को झुकाने की रणनीति पर चल रहा है। चीन के प्राचीन रणनीतिक विचारक सुन चू की प्रसिद्ध उक्ति के अनुरूप उसकी कोशिश है कि युद्ध लड़े बिना ही युद्ध जीत ले। दूसरी तरफ का भी प्रयास है कि कूटनीतिक चालों के जरिये दुश्मन को काबू में किया जाए। जब दुश्मन देश के पास कई गुना अधिक सैन्य ताकत हो तो युद्ध जीतने के लिए चतुर समर नीति का सहारा लेना ही होता है। पड़ोसी देश पाकिस्तान का उदाहरण हमारे सामने है। सैन्य ताकत के लिहाज से कमजोर होने के बावजूद भारत पर भारी पड़ने के लिए उसने आतंकवाद को राज्य की नीति बना कर वर्षों से कम तीव्रता वाला युद्ध छेड़ रखा है। हालांकि भारत भी हालात के अनुरूप दोतरफा रणनीति अपनाते हुए चल रहा है। आतंकवादी गतिविधियों से भारतीय सुरक्षा बल निबट रहे हैं, लेकिन अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान की पोल खोलने का काम कूटनीति के जरिए किया जा रहा है।

चीनी सीमा पर उपजी चुनौतियों से भी इसी तरह निपटने की सोची गई। कूटनीति के जरिये चीनी ड्रैगन को काबू में करने के लिए ही 2019 के अंत तक भारत–चीन शिखर बैठकों का सिलसिला चलाकर यह माना जा रहा था कि चीन और भारत के बीच तनाव तो चलता रहेगा, लेकिन सैन्य टकराव की स्थिति नहीं पैदा होगी। हालांकि, वह अनुमान गलत साबित हुआ। अब नया साल भारत की समर नीति के इम्तहान का साल होगा, जब चीन को कूटनीतिक चालों के जरिये वास्तविक नियंत्रण रेखा पर पीछे हटने यानी पांच मई, 2020 से पहले वाली स्थिति बहाल करने को तैयार करना होगा। चीन पर कूटनीतिक दबाव डालने के लिए ही भारत चार देशों के गुट क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया) में शामिल हुआ है। इसके जरिए वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन की विस्तारवादी नीति के खिलाफ माहौल बनाने में कामयाब हो रहा है। यही वजह है कि चीन, रूस की पहल पर मॉस्को में बुलाई जा रही आरआईसी (रूस, भारत, चीन) की शिखर बैठक में भाग लेने के लिए तैयार हो गया है।

अष्टयोग-5028

3	2	7			5	1
4	31		31	2	31	
	5		3	1	7	
6	31	3	29		38	6
	3			6		
7	31	5	36		35	5
		4		7	2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5027 का हल

3	2	4	6	7	5	1
4	23	2	31	2	39	7
2	5	1	3	6	7	4
6	33	5	29	3	36	6
5	3	6	4	1	7	2
7	37	3	36	5	29	5
1	5	7	6	4	2	3

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग: चीन भी नहीं चाहता सीमा पर सैन्य तनाव

मोहन। हकीकत यही है कि चीन भी नहीं चाहता सीमा पर जारी सैन्य तनाव दोनों देशों के बीच युद्ध में बदल जाए। वह बस अपना चेहरा बचाने के लिए भारत से कुछ रियायतें चाहता है। भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि वह जैसे युद्ध के मोर्चे पर झुकने को तैयार नहीं हुआ, वैसे ही वार्ता के टेबल पर भी चीन के समक्ष झुका हुआ नजर नहीं आए। 2021 के दौरान भारतीय सेना ने देश की लाज बचा कर रखी। पक्के इरादे वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी नए साल में उम्मीद की जाती है कि अपने देश की आधुनिक सैन्य ताकत के बल पर ऐसी रणनीतिक चालें चलें, जिससे चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा का आदर करने को बाध्य हो जाए। इसलिए 2022 के दौरान भारतीय सुरक्षा कर्णधारों के समक्ष सबसे परेशान करने वाला सवाल यही रहेगा कि दुनिया की नंबर–एक महाशक्ति बनने का सपना देखने वाले चीन से कैसे निबटा जाए। इसके लिए जो भी समर नीति अपनाई जाए, सैन्य ताकत उसका एक अभिन्न हिस्सा होगी।